पाठ योजना

छात्राध्यापक अनुक्रमांक –9467867197 कक्षा –दसवीं

विषय – संगीत गायन/वादन/नृत्य समय–40 मिनट

उपविषय– तीन ताल (एक गुण से चार गुण तक की लयकारी) तिथि – 17/03/2023

पाठ योजना के क्रम	पाठ योजना के क्रम का विवरण
अधिगम प्रतिफल : **Learning Outcomes :**	अधिगमकर्ता संगीत वाद्ययंत्र की श्रेणियों और वाद्य प्रकारों में अंतर जानेगा तथा संगीत के माध्यम से अंदर छिपी सांगीतिक प्रतिभा को तराशने का प्रयास करेगा। इसके अतिरिक्त लयबद्ध गतिविधियों का प्रदर्शन और अनुकरण करेगा और ताल के आवश्यक सिद्धांतों से परिचित होगा कि किसी एक ताल के माध्यम से अन्य तालों को कैसे बोला व लिखा जा सकता है।
अधिगम उद्धेश्य : **Learning Objectives:**	अधिगमकर्ता को व्यक्तिगत रूप से या समूहों में अवसर प्रदान किए जा सकते है और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सकता है, कि वे तबला, ढोलक, खोल, मृदंगम आदि जैसे वाद्ययंत्रों को बजाने के लिए अंगुलियों और हथेली का उपयोग करके ताल और लयकारी बजा सकेगा। तबला, ढोलक, मृदंगम आदि पर विभिन्न कलाकारों द्वारा बजाई गई ताल एवं लयकारियों को सुनेंगा और समझेगा। जैसे– तीन ताल , दादरा ताल, आदिताल, रूपक तालों की पठन्त–ताली और खाली सहित तथा विभिन्न तालों , दुगुन, तिगुन, चौगुन को बजाने की क्रिया सीखेगा।
अधिगम सामग्री : **Learning Resources :**	उपविषय सम्बधिंत श्यामपटट्, चॉक, झाडन, तबला, ढोलक, इलैक्ट्रोनिक तबला आदि का प्रयोग किया जायेगा।
पूर्व ज्ञान अनुमान : **Previous Knowledge Essume:**	छात्रअध्यापक को ज्ञान होगा कि बच्चों को पहले से ही नवीन विषय ज्ञान से संबंधित कुछ ज्ञान होगा। तांकि नवीन ज्ञान को पूर्व ज्ञान से संबध स्थापित करते हुए आगे का कार्य करवाया जा सके। छात्रअध्यापक को ज्ञान होगा कि अधिगमकर्ता को संगीत के प्रकारों का ज्ञान है तथा गायन–वादन के लिए किसका प्रयोग किया जाता है।
पूर्व–ज्ञान परीक्षण : **Previous Knowledge Test :**	विद्यार्थियों की स्मरण शक्ति की जांच करने तथा नवीन ज्ञान से सम्बन्ध स्थापित करने हेतु छात्राध्यापक छात्रों से पूर्व ज्ञान सम्बन्धी कुछ प्रश्न पूछेगा। 1. गायन के लिए किसका प्रयोग किया जाता है? 2. वादन के लिए किसका प्रयोग किया जाता है? 3. गायन और वादन में किसको सर्वश्रेष्ठ माना जाता है? 4. गायन–वादन और नृत्य की क्रिया में जो समय लगता है उसे मापने के पैमाने को क्या कहते है? 5. गाने–बजाने में जो समय लगता है उसकी समान गति को संगीत में क्या कहते है?
उद्धेश्यकथन एवं विषय/उपविषय की घोषणा : **Objetive statement:**	अन्तिम कुछ प्रश्नों का उत्तर सन्तोषजनक एवं असन्तोषजनक पाकर छात्राध्यापक विषय की घोषणा करेगा कि आज संगीत में तीन ताल के बारे मे जानेंगे तथा उसकी विभिन्न लयकारी को जानेंगे।

श्यामपट् पर भी उपविषय लिखा जायेगा।

प्रस्तुतीकरण : Presentation **:**	प्रस्तुतीकरण को सुविधा के लिए सैद्धान्तिक तथा क्रियात्मक दो पक्षों में विभाजित किया जायेगा।

सैद्धान्तिक पक्ष :

विषय सामग्री	पाठ्यविधि	छात्रों का कार्य	श्यामपट् कार्य
ताल **गायन, वादन, नृत्य** **कुल 12 स्वर होते है** **<u>शुद्ध स्वर–</u>** सा, रे, ग, म प ध नि सां **<u>कोमल स्वर–</u>** <u>रे</u> <u>ग</u> <u>ध</u> <u>नि</u> **<u>तीव्र स्वर</u>**– म' तीन ताल, कहरवा ताल, दादरा ताल, रूपक ताल **चिह्न, :** **मात्राए :** **बोल :**	**छात्राध्यापक विषय की घोषणा** करने के पश्चात् अधिगमकर्ताओं को बतायेगा कि संगीत के तीन प्रकार है गायन, वादन और नृत्य। और तीनों प्रकारों की कलाओं में ताल की बहुत विशेष भूमिका है। ताल के माध्यम से ही संगीत की तीनों कलाओं में भाव उत्पन्न होते है। ताल के माध्यम से ही तीनों कलाओं में जो समय लगता है उसे मापने के पैमाने को **'ताल'** कहते है। **छात्रअध्यापक ताल के बारे में बताने से पहले यह भी सपष्ट करेगा कि संगीत की तीनों कलाएं स्वर और ताल पर निर्भर है। छात्र अध्यापक बच्चों से संगीत के स्वरों के बारे में पूछेगें कि कुल कितने स्वर होते है।** **छात्रअध्यापक छात्रों का जवाब सुनने के बाद सही उत्तर बताएगें।** संगीत में कुल 12 स्वर होते है तथा अलग–अलग गीतों, भजनों, लोकगीतों तथा रागों में अलग–अलग तालों का प्रयोग होता है। अलग–अलग तालों के नाम भी उदाहरण के तौर पर छात्रअध्यापक द्वारा श्यामपट् पर लिखा जायेगा इसके पश्चात् छात्रअध्यापक द्वारा बताया जायेगा कि भारतीय शास्त्रीय संगीत में किसी भी ताल को लिखने के लिए सबसे पहले चिह्न, मात्राओं और बोल के बारे में पता होना जरूरी है। अलग–अलग तालों में अलग–अलग चिह्न, मात्राओं और बोल को लिखा व बोला जाता है। आज तीन ताल के बारे में बताया व लिखाया जायेगा तथा उसकी लय के प्रकारों को भी जानेगे। तीन ताल के उदाहरण से आप सभी छात्र अन्य दूसरी तालों को भी किसी भी किताब से देख कर भी याद करके आसानी से लिख सकते है। तीन ताल याद करने के लिए सबसे पहले कॉपी के एक साईड आप सभी छात्र चिह्न, मात्राए तथा बोल लिखेंगे।	छात्र अध्यापक की बात ध्यान से सुनेंगे। छात्र श्यामपट् को ध्यान से देखेगें और छात्रध्यापक की बात भी सुनेंगे। कुछ छात्र गलत बताएगें और कुछ छात्र सही बताएगें। छात्रों का ध्यान श्यामपट् की तरफ आकर्षित किया जायेगा। छात्र भी अपनी कॉपी पर एक साईड में चिह्न, मात्राए तथा बोल लिखेंगे।	श्यामपट्ट पर संगीत के तीनों प्रकारों के नाम लिखें जायेगे। **गायन–वादन–नृत्य** के सम्मिलित रूप को संगीत कहा जाता है। **गायन–वादन–नृत्य** ⇩ **स्वर – ताल** संगीत की तीनों कलाओं पर गोला बनाते हुए बताया जायेगा कि तीनों कलाएं स्वर और ताल पर निर्भर है। **कुल 12 स्वर होते है** **<u>शुद्ध स्वर–</u>** सा, रे, ग, म प ध नि सां **<u>कोमल स्वर–</u>** <u>रे</u> <u>ग</u> <u>ध</u> <u>नि</u> **<u>तीव्र स्वर</u>**– म' तीन ताल, कहरवा ताल, दादरा ताल, रूपक ताल **चिह्न, :** **मात्राए :** **बोल :**

	जैसा कि पहले बताया गया है कि सभी तालों के अपने चिह्न, मात्राए तथा बोल होते है उसी प्रकार तीन ताल में कुल 16 मात्राए होती है तथा प्रत्येक मात्रा के नीचे एक–एक बोल लिखा जायेगा अर्थात मात्राओं के बराबर ही 16 बोल लिखे जायेगें। तो सबसे पहले आप सभी छात्र कॉपी पर 16 मात्राए और उनके नीचे 16 बोल इस प्रकार लिखेगें बताते हुए **छात्रअध्यापक श्यामपटट् का प्रयोग करेगा।**	छात्र भी अपनी कॉपी पर एक साईड में चिह्न, मात्राए तथा बोल लिखने के बाद उनके मात्राओं के सामने 1 से 16 सख्यां लिखेगें तथा बोल भी 1 से 16 मात्रा के नीचे लिखेंगे।	श्यामपटट् पर तीन ताल की मात्राए और बोल को लिखा जायेगा।

श्यामपटट् का प्रयोग करते हुए

चिह्न, :															
मात्राए :	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल :	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा

विषय सामग्री	पाठ्यविधि	छात्रों का कार्य	श्यामपट् कार्य
	तीन ताल के लिए मात्राए तथा बोल लिखने के बाद छात्रअध्यापक द्वारा बताया जायेगा कि प्रत्येक ताल में मात्राओं को अलग–अलग विभाग में भी बाटां जाता है। विभाग का मतलब होता है कि किसी ताल में कितनी–कितनी मात्राओं के कितने विभाग है। विभाग के लिए तीन ताल में प्रत्येक चार–चार मात्राओ के बाद एक लाईन खींच दी जाती है। यह लाईन चिह्न, मात्राओं और बोल तक को मिलाते हुए खीची जायेगी। जिससे तीन ताल के उदाहरण से समझा जा सकता है		श्यामपटट् पर तीन ताल की मात्राए और बोल के साथ विभाग की लाईन को लिखा जायेगा।

श्यामपटट् का प्रयोग करते हुए

चिह्न, :															
मात्राए :	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल :	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा

विषय सामग्री	पाठ्यविधि	छात्रों का कार्य	श्यामपट् कार्य
सम का चिह्न– X **खाली का चिह्न– 0** **ताली का चिह्न–2,3,4..** **.....**	इसके अतिरिक्त चिह्न का प्रयोग भी बहुत महत्वपूर्ण है। क्यो कि किसी ताल को क्रियात्मक रूप देने के लिए चिह्न को समझना बहुत जरूरी है। उत्तर भारत की पं भातखण्डे जी की स्वरलिपी के अतर्गत कुछ इस प्रकार चिह्न बताये गए है। छात्रअध्यापक श्यामपटट् पर लिख कर समझायेगें।	छात्र भी अपनी कॉपी पर श्यामपटट् लिखी बातें उतारेगें तथा छात्रअध्यापक की बातों का अनुसरण करेगें।	**सम का चिह्न– X** **खाली का चिह्न– 0** **ताली का चिह्न–2,3,4.....**

	सम का चिह्न प्रत्येक ताल की पहली मात्रा के उपर लिखा जाता है तथा जिसको (X) काटे द्वारा दर्शाया जाता है। खाली का चिह्न ताल की आवश्यकता अनुसार विभाग के बाद लगने वाली मात्रा के उपर लिखा जाता है। जिसको (0) शून्य द्वारा दिखाया जाता है। इसके अतिरिक्त जहां–जहां ताल में ताली का प्रयोग होगा वहां संख्या के रूप में ताली के चिह्न (2, 3, 4) इत्यादि खाली के तरह विभाग की बाद वाली मात्रा के उपर लिखा जायेगा। जिस ताल में जहां सम या ताली का चिह्न आता है उस जगह हाथ से ताली बजाई जाती है तथा जहां शून्य अर्थात खाली का चिह्न आता है वहां ताली न बजाते हुए हाथ को अपने कधें तक पीछे ले जाते है।		श्यामपटट् पर तीन ताल की मात्राए, बोल, विभाग की लाईन के साथ चिह्नों को लिखा जायेगा।

श्यामपटट् का प्रयोग

चिह्न, :	X				2				0				3			
मात्राए :	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**
बोल :	**धा**	**धिं**	**धिं**	**धा**	**धा**	**धिं**	**धिं**	**धा**	**धा**	**तिं**	**तिं**	**ता**	**ता**	**धिं**	**धिं**	**धा**

विषय सामग्री	पाठ्यविधि	छात्रों का कार्य	श्यामपट् कार्य
एक गुन दो गुन तीन गुन चार गुन	इस प्रकार प्रत्येक मात्रा के नीचे यदि एक बोल लिख कर ताल को पूरा किया जाए तो वह उस ताल का एक गुण कहलाता है। अगर किसी ताल की प्रत्येक मात्रा के नीचे दो बोल आये तो वह उस ताल का दुगुन व तीन बोल आये तो तीगुन कहलायेगा। किसी भी ताल का एक गुन से दो, तीन या चार गुन बनाना होतो उसी एक ताल के एक गुन से ही शेष गुन बनाये जा सकते है। उसके लिए किसी भी ताल के एक गुन में से बोल को छोडकर शेष सभी चिह्न, मात्राए और विभाग वैसे के वैसे लिख दे तथा उसी ताल के बोलों को दोगुन में लिखने के लिए प्रत्येक बोल के साथ वाला एक और बोल लेते हुए प्रत्येक मात्रा के नीचे एक साथ दोनों लिख दें। इस प्रकार तीन ताल के 16 बोल 08 मात्राओं में पूरे हो जायेगे तथा आगें दोगुन में 9 से 16 मात्रा के नीचे दुबारा एक गुन के 1 से 16 मात्रा के बोल दो–दो जोडते हुए दुबारा लिख दे तथा प्रत्येक मात्रा के नीचे जो दो बोल एक साथ जोडकर लिखें गए है उनके नीचे एक–एक अर्द्धचन्द्र लगा देना चाहिए।		एक गुन दो गुन तीन गुन चार गुन

	इसी प्रकार तीन गुन में तीन बोल लेंगे व चार गुन में चार–चार बोल लेंगे।		

श्यामपटट् का प्रयोग करते हुए (तीन ताल का एक गुन)

चिह्न, :	X				2				0				3			
मात्राए :	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल :	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा

श्यामपटट् का प्रयोग करते हुए (तीन ताल का दो गुन)

चिह्न, :	X				2				0				3			
मात्राए :	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल :	धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धाधिं	धिंधा	धातिं	तिंता	ताधिं	धिंधा

क्रियात्मक पक्ष–

विषय सामग्री	पाठ्यविधि	छात्रों का कार्य	श्यामपट् कार्य/आवश्यक सामग्री का प्रयोग
	छात्रअध्यापक तीन ताल का एक गुन से चार गुन तक समझाने के बाद उसको छात्रों को हाथ पर बजाना सीखायेगें। प्रत्येक ताल के एक गुन लिखने के बाद उसको हाथ पर बजा कर भी उस ताल को याद किया जा सकता है। ताल को याद करने के लिए उसके बोल और चिह्न अच्छे से याद होना बहुत जरूरी है तथा गति पर ध्यान देना भी बहुत जरूरी है। तीन ताल को हाथ पर एक गुन बजाने के लिए उस ताल के बोल याद करने के बाद चिहन् को देखेगें की जहां भी सम या ताली का चिह्न है उस पर हाथ से ताली बजायेगे तथा जहां खाली का चिह्न है वहां हाथ से ताली न बजा कर हाथ को कधें तक पीछे ले जायेगें। इसके अतिरिक्त शेष मात्राओं पर जिन पर कोई चिह्न नही लिखा जाता उनको अपने दायें हाथ की अगुलियों से ईशारा दिखायेगें। **छात्र अध्यापक सभी छात्रों को गति को बराबर रखते हुए तीन ताल का एक गुन हाथ पर बजाना सीखायेगे।**	सभी छात्र छात्रअध्यापक का अनुसरण करते हुए अपने हाथों पर तीन ताल का एक गुन बजायेगे।	

पुनरावृतिः **Recurrence**	पाठ की जांच के लिए छात्राध्यापक तीन ताल का एक गुन व्यक्तिगत रुप से सुनेगा तथा कुछेक प्रश्न पूछेगा– 1. तीन ताल के दो गुन में प्रत्येक मात्रा के नीचे कितने बोल होगे? 2. तीन ताल में कुल कितने विभाग होते है? 3. तीन ताल का एक गुन हाथ पर सुनाओ।
गृहकार्यः Homework :	सभी छात्र घर से तीन ताल का तीन गुन व चार गुन लिख कर लायेंगे।